



जादुई धागों का सफर

बहुत-बहुत पहले की बात है, जब दुनिया आज से बिलकुल अलग थी। न पक्के घर थे, न बड़े-बड़े शहर, और न ही रंग-बिरंगे कपड़े। लोग गुफाओं में रहते थे और पेड़ों के पत्तों या जानवरों की खाल से अपना बदन ढकते थे।

लेकिन उन दिनों भी, लोग बहुत होशियार और जिज्ञासु थे। उनमें से एक थी, लीना। लीना एक दिन जंगल में घूम रही थी, जब उसने एक चिड़िया को अपना घोंसला बनाते देखा। चिड़िया घास के छोटे-छोटे तिनकों को एक-दूसरे में फंसाकर एक प्यारा सा, गोल घोंसला बना रही थी।

"अरे वाह!" लीना ने सोचा, "कितना बढ़िया तरीका है चीज़ों को आपस में जोड़ने का!"

वह घर लौट आई और सोचने लगी कि क्या वह भी ऐसा कुछ कर सकती है। उसने सूखी घास के कुछ तिनके उठाए और उन्हें एक-दूसरे में फंसाने की कोशिश की। काम मुश्किल था, लेकिन लीना ने हार नहीं मानी। धीरे-धीरे, उसने एक छोटा सा चटाई जैसा कुछ बना लिया। वह बहुत खुश थी!

लीना ने अपनी इस खोज के बारे में अपने दोस्तों को बताया। सबने सोचा, "यह तो कमाल है!" फिर उन्होंने अलग-अलग चीज़ों के साथ कोशिश की – पतली टहनियाँ, जानवरों के बाल, और यहाँ तक कि पौधों के रेशे भी।

समय बीता, और लोगों ने सीखा कि पौधों से मिलने वाले रेशे, जैसे कपास और पटसन, बहुत मजबूत और मुलायम होते हैं। उन्होंने इन रेशों को पतला करने का तरीका भी ढूंढ लिया, जिससे धागे बने।

अब उनके पास धागे थे, लेकिन उन्हें बुनना कैसे था? एक दिन, एक और समझदार इंसान, जिसका नाम काई था, एक मकड़ी के जाले को देख रहा था। उसने देखा कि मकड़ी कैसे अपने धागों को एक पैटर्न में बुनती है, एक ऊपर, एक नीचे, फिर एक ऊपर, एक नीचे।

"यही तो राज़ है!" काई चिल्लाया।

उसने और उसके दोस्तों ने लकड़ी की टहनियों और पत्थरों का इस्तेमाल करके एक ढांचा बनाया। यह ढांचे आज की बुनाई मशीन, यानी करघे का सबसे पहला रूप था। इस पर वे धागों को ऊपर-नीचे करके बुनने लगे।

शुरुआत में, कपड़े मोटे व खुरदरे होते थे, लेकिन धीरे-धीरे, लोगों ने उन्हें नरम और सुंदर बनाना सीख लिया। उन्होंने अलग-अलग रंगों के धागे इस्तेमाल करने शुरू किए और उन पर तरह-तरह के डिज़ाइन बनाने लगे।

और बस, ऐसे ही शुरू हुआ बुनाई का अद्भुत सफर! सदियों तक, लोग अपने हाथों से बुनाई करते रहे। फिर, बहुत बाद में, बड़ी-बड़ी मशीनें बनीं जिन्होंने यह काम बहुत तेज़ी से करना शुरू कर दिया।

आज, जब तुम अपनी शर्ट, पैंट या स्वेटर को देखते हो, तो याद रखना कि वे सब धागों के एक जादुई सफर से होकर आए हैं। यह सफर उन इंसानों से शुरू हुआ था जिन्होंने घास के तिनकों को एक-दूसरे में फंसाया था, और चिड़िया के घोंसले और मकड़ी के जाले से प्रेरणा ली थी।

तो बच्चो, अगली बार जब तुम कोई कपड़ा पहनो, तो सोचना कि यह सिर्फ एक कपड़ा नहीं है, बल्कि यह इंसानों की समझदारी, कड़ी मेहनत और रचनात्मकता की एक लंबी और अद्भुत कहानी है।







कुछ बुनें, कुछ सुनें



बुनाई की बुनियादी समझ देने वाली रोचक गतिविधि

सामग्री: ए-4 आकार का सादा कागज़, ए-4 आकार की रंगीन कार्डशीट, स्केल, पेंसिल, कैंची और फेविकोल।

विधि:

1. सादे कागज़ में चौड़ाई वाले दोनों किनारों से एक से.मी. की दूरी पर सीधी रेखा खींच लें।
2. ऊपर बनीं दोनों रेखाओं को जोड़ते हुए कागज की लंबाई में एक-एक से.मी. की दूरी पर रेखाएं खींच लें।
3. कागज़ को बीचों-बीच मोड़ें और दूसरे स्टेप में बनी रखाओं पर कागज़ को काटें। ध्यान रहे कि इसे पूरा नहीं बल्कि पहले स्टेप की रेखाओं तक ही काटना है। आपके पास अब एक से.मी. चौड़ी ऐसी पट्टियां है जो किनारों में क्षैतिज पट्टी से जुड़ी हुई हैं।
4. रंगीन कार्डशीट की एक से.मी. चौड़ी पट्टियां काट लें।
5. सादे कागज़ को मेज पर रखें और रंगीन पट्टियों से बुनाई शुरू करें। इसके लिए रंगीन पट्टी को स्टेप 3 में बनी सफ़ेद पट्टियों के बीच इस तरह पिरोना है कि यह क्रमशः एक सफ़ेद पट्टी के ऊपर और दूसरी के नीचे रहेगी। रंगीन पट्टी के दोनों सिरों को सफ़ेद कागज़ के किनारों पर फेविकोल से चिपका दें।
6. इस तरह रंगीन पट्टियों से पूरे कागज़ में बुनाई कर लें।
7. बुनाई पूरी हो जाने के बाद कागज़ के दोनों किनारों पर एक सेमी चौड़ी रंगीन पट्टी चिपका दें।
8. आपके पास चटाई का एक खूबसूरत नमूना तैयार है।









पहने बुनकर

किसने पहले करी बुनाई
जिन्हें देख के हमको आई
कुछ ऐसे ही जानवरों की
मास्टर जी ने कथा सुनाई

कई परिंदे घोंसला बुनते
तिनका-रेशा जोड़ के बुनते
अंडों से जब बच्चे आते
उनका चीं-चीं चां-चां सुनते

मकड़ी भी तो जाला बुनती
जाले में कीड़ों को धुनती
वहीं पे अपने बच्चे जनती
उनका रोना-गाना सुनती

ऊदबिलाव भी पक्का बुनकर
चौंक न जाना क़िस्सा सुनकर
एक रात में नदी बांधता
लट्ठे-झाड़ी-पत्ते बुन कर!

इनको देखा-देखी हमने
खाल-पत्तियां फेंकी हमने
कपड़ा-लत्ता बुनना सीखा
और बघारी शेखी हमने

• आशुतोष उपाध्याय





कविता पोस्टर: बाल विज्ञान खोजशाला समिति, बेरीनाग (उत्तराखण्ड)